भारतीय परिवेश को खंगालती रचनाएं

पुस्तक समीक्षा - - डॉ. इन्द्र सेंगर

'मिला काल से आँख' वरिष्ठ कवि श्री भारत भूषण आर्य की सद्य प्रकाशित कृति है। इससे पहले आपकी दोहा, गजल और कविता विधा में 5 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनका हिन्दी जगत् में हार्दिक स्वागत हुआ है। इस कृति को आपने 'कुंडलिया छन्द' में प्रस्तुत किया है। इसकी भूमिका यशस्वी साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र आर्य ने लिखी है। इसमें 200 कुंडलिया छन्द समाविष्ट हैं। पुस्तक का प्रारंभ 'गणेश जी की वन्दना' से किया गया है। इसमें कवि के उदात्त भाव का ज्वलन्त प्रमाण निहित है । कवि अक्षर-अक्षर में ब्रह्म और ज्ञान का आलोक प्रस्फुटित होने और संसार तिमिर - मुक्त होने एवं दशों दिशाओं में ज्ञान के दीप के आलोक की प्रार्थना करता है-

लम्बोदर ! हे गजवदन ! दो ऐसा वरदान, अक्षर-अक्षर ब्रह्म हो, अक्षर-अक्षर ज्ञान । अक्षर-अक्षर ज्ञान, बहे हर ओर उजाला, कटें तिमिर के पाश, मिटे नफ़रत की ज्वाला |

कह भूषण कवि आर्य, बने मन प्रेम-सरोवर,

जले दीप से दीप, दसों दिश हे लम्बोदर ॥ (पृष्ठ 21)

इस कृति में कतिपय कुंडलियाँ कवि की जीवन-संगिनी दिवंगता अनुराधा की स्मृति में भी लिखी गई हैं, जो भारत भूषण आर्य को हिन्दी - काव्य की शोक-गीत परम्परा के कवियों में पंक्तिबद्ध करती हैं। यह बिछोह की सघन पीड़ा कई कुंडलियों में पाठक को वेदना के गहन सागर में डुबा देती है-

जाने से पहले जरा कर लेते दो बात,

कुछ तो घटती दर्द की लम्बी काली रात।

लम्बी काली रात पता है कैसी होती,

बिन पानी ज्यों मीन तड़पती, वैसी होती।

कह भूषण कवि आर्य, हुए हम तुम अनजाने,

फिर भी गाता रोज, तुम्हें क्यों मन ही जाने ॥ (पृष्ठ 29)

कवि ने अपनी कृति में प्रेम को, लौकिक और अलौकिक दोनों स्तरों पर अत्यन्त व्यापक और उदारता के साथ प्रस्तुत किया है। उसका ढाई आखर का प्रेम कभी कबीर का निर्गुण राम बन जाता है तो कभी सूर का श्याम बन जाता है। उनका प्रेम सागर से गहरा और आकाश से भी ऊँचा है। साथ ही सागर और सरिता के सम्पृक्त मिलन जैसा है-

सागर में नदिया मिली, मिला प्रेम का तीर,

प्रीति सुहागिन हो गई मिला नीर में नीर।

कह भूषण कवि आर्य, प्रेम के ढाई आखर।

जिसने साधे, पार, पार वह सातों सागर ॥ (पृष्ठ 21)

कवि की सशक्त मान्यता है कि जिस प्रकार बिना फूल के उपवन नहीं होता, उसी प्रकार बिना प्रेम के जीवन भी निरर्थक होता है। अहिंसा एवं गांधी जी के आदर्श की याद दिलाते हुए कवि का कथन

गांधी बाबा कर दिए अलमारी में बंद,

बन्दूकें अब लिख रहीं अमन चैन के छंद। (पृष्ठ 28)

दुर्योधन की सज रही पग-पग पर बारात,

सत्य-अहिंसा हो गई दो कौड़ी की बात। (पृष्ठ 28)

समग्र पुस्तक का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि प्रिय भाई भारत भूषण का रचनाकार जिस काव्य के वटवृक्ष पर बैठा है, वहाँ से वह समाज, देश, राजनीति और संस्कृति के सूक्ष्म से सूक्ष्म कार्यकलापों का पुंखानुपुंख अवलोकन कर रहा है और उसे अभिव्यक्त करता है कुंडली के रूप में।

आज भारतीय समाज अनेक विसंगतियों, समस्याओं, अंधविश्वासों, रूढ़ियों आदि से जूझ रहा है। समाज में विषमता का परिवेश, नई पीढ़ी की माता - पिता के प्रति संवेदनहीनता, टूटते परिवार, रिश्तों का खोखलापन, आदि भारतीय संस्कृति की जड़ों को कमजोर कर रहे हैं। वैश्वीकरण के दौर में पश्चिमी बयार ने जन-मानस को प्रभावित किया है। यह सब कवि की कलम से इस काव्य-कृति में अत्यन्त प्रभावी रूप में व्यक्त किया गया है।

मैंने कहा न कि कवि अपनी भावनाओं के महावृक्ष पर बैठकर सब पर अपनी नजर टिकाए हुए है। चाहे आज के वे साधु-संत हों, जो दिन-रात समाज के सामने अन्धविश्वास और रूढ़ियों का अम्बार परोस रहे हैं। चाहे भारतीय राजनीति का गिरता हुआ स्तर हो, इन सभी का जिक्र भी कवि से बेहद ईमानदारी से किया है-

जिस दल में कुर्सी मिली, हुए उसी के यार,

राजनीति में एक से बढ़कर एक सियार। (पृष्ठ 95)

कुंडलियों में प्राकृतिक चित्रण का सौन्दर्य, सार्थक बिम्ब विधान और मानवीयकरण एवं रूपकों का समन्वय काव्य–सौष्ठव में श्रीवृद्धि करता हुआ दिखता है। प्रस्तुत है एक चाक्षुष बिम्ब और मानवीयकरण का सुन्दर चित्रण—

इठलाती सी चल रही, धवल चाँदनी रात,

लगे कान में कह गई, हवा चाँद की बात। (पृष्ठ 96)

संदेश पक्ष में आज के बाल - जीवन के दंश, बेटियों की महत्ता, वर्तमान न्याय व्यवस्था आदि पर वे कबीर के तेवर में करारी चोट करते हुए वे धन्ना सेठ - कुबेरों की भी कोई परवाह नहीं करते । करें भी क्यों, उन्हें जो आनन्द की अनुभूति कबीर - रंग में रंगी फकीरी में हो रही है, उसकी तुलना में अमीरी कुछ भी नहीं है-

बचपन पर्वत ढो रहा भूल - भालकर रेल,

हवा नई, बातें नई, लेकिन वो ही खेल। (पृष्ठ 75)

घर घर में मधु चाँदनी, घर घर से तम दूर,

बेटी से ही हो रहा दसों दिशा में नूर।

दसो दिशा में नूर बेटियाँ जैसे मलयज,

ये ही सुर - मधु - राग तीज सावन की सजधज। (पृष्ठ 64)

निश्चित पहले से हुआ न्याय धर्म का न्याय,

फांसी का दिन पूछ लो उत्तम यही उपाय |

उत्तम यही उपाय कहाँ फरियाद करोगे,

कौन सुनेगा बात बताकर और मरोगे।

कह भूषण कवि आर्य, कबूतर बैठा चिंतित,

कहाँ फंसेगा बाज, हंस का मरना निश्चित | | (पृष्ठ 50)

'भूषण' फक्कड़ ही भला, सदा राम की टेर,

जिसको बनना वह बने, धन्ना सेठ - कुबेर। (पृष्ठ 69)

इतना ही नहीं कवि द्वारा कपटी भक्तों, कपटी साधुओं की भी जमकर खबर ली गई है। आज धर्म के नाम पर ऐसे सन्तों की बाढ़ सी आ गई है, जो चरित्रहीन होते हुए भी अपने अंधभक्तों के लिए भगवान बने हुए हैं—

तन-मन काला नाग - सा, निपट चरित से हीन,

उजले हंसों के हुए, आज रंग ये तीन।

आज रंग ये तीन, यही तो पार उतारें,

व्यर्थ सत्य की नाव, धर्म की वे पतवारें।

कह भूषण कवि आर्य, न भटकेगा तू वन-वन,

सीख वक्त के तौर, दूध - सा होगा तन - मन ॥ (पृष्ठ 40)

आवरण-सम्मति के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्रीनिवासन् अय्यर के अनुसार इस काव्य कृति में प्रेम के चरम ऐक्य, राजनीति की स्वभावजन्य अविश्वसनयीता, सत्ता के द्वन्द्व, उसकी बिछी हुई बिसात, रिश्तों का खोखलापन, मानवोचित दुर्बलता, दम्भ - आडंबर, धर्म का ह्रास, किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति, दिग्भ्रम, टूटते बिखरते घर-परिवार, तत्जन्य दंश, बचपन के साथ

अन्याय, समाज का वैषम्य परिवेश, भारतीय संस्कृति की हिलती जड़ें, जैसी समस्याओं, विदूपताओं और विसंगतियों पर कवि द्वारा कसे गए तंज रूबरू होते हैं।

अध्यात्म क्षेत्र में कबीर, रहीम और स्वामी दयानन्द सरस्वती आपके आदर्श हैं। कबीर का अध्यात्म, रहीम की नीति और स्वामी दयानन्द का जीवन दर्शन आपके दिशा- बोध है। संकलन की कुंडलियाँ एक से बढ़कर एक हैं। छन्द का कुशल निर्वाह हुआ है । बिम्बों, प्रतीकों, अलंकारों और शब्दशक्तियों का प्रयोग सहज और प्रभावशाली है।

कवि ने जो कविता के बारे में कुंडली प्रस्तुत की है, उसकी कुंडलियाँ उसी कसौटी पर खरी उतरती हैं। कविता के बारे में आपकी मान्यता है-

कविता कवि का दर्द मन विरहिन की चिरपीर,

नैनन बहता नीर या, प्रेम पगी तस्वीर।

प्रेम पगी तस्वीर, कभी आहों की नदिया,

कभी गन्ध मकरन्द, कभी फूलों की बगिया।

कह भूषण कवि आर्य, कभी तो लगती सविता,

कभी ओस की बूँद, कभी शोलों-सी कविता ॥ (पृष्ठ 52)

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में, मैं सारांशतः कहूँगा कि मिला काल से आँख कृति का शीर्षक भी एकदम सार्थक है। इन कुंडलियों के माध्यम से कवि ने निश्चय ही काल से आँखें मिलाकर बातें की हैं, निडरता के साथ कवि ने आंखें मिलाकर नहीं बल्कि आँखों में आँखें डाल कर बातें की हैं। इस काव्य-कृति के कथ्य का संदेश हमें अंधकार से प्रकाश की ओर, भय से निडरता की ओर, निराशा से आशा की ओर, अविश्वास से विश्वास की ओर, शून्य से अनन्त की ओर यात्रा करने को प्रोत्साहित करता है।

मैं इस कृति का समीक्षात्मक परिचय देते हुए कहना चाहूंगा कि—

बगिया दो सौ सुमन की भाँति-भाँति की गन्ध,

कुंडलिया के रूप में, दिये अनूठे छन्द।

दिये अनूठे छन्द, सर्व परिवेश खंगाला,

यत्र-तत्र - सर्वत्र निरीक्षण सब कर डाला।

कहें समीक्षक इन्द्र, दगीली जिनकी अंगिया,

उनके सब ही दाग, दिखाती अनुपम बगिया।।

मैं इस श्रेष्ठ कृति के लिए भाई भारत भूषण को अनेकशः बधाइयाँ एवं शुभकामनाएं देता हूं। इसी प्रकार निरन्तर लिखते रहें और समाज, देश एवं संस्कृति को दिशा देते रहें।

वे

कृति-परिचयः

कृति का नाम : 'मिला काल से आँख '

रचनाकार : भारत भूषण आर्य

पृष्ठ सं. : 120

मूल्य : 450/-

संस्करण : 2025

प्रकाशक : साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली-110032

– डॉ. इन्द्र सेंगर
Email: drindrasengar@gmail.com
Mob. 9911190634